

BA- Part - II, [INDIAN GEOGRAPHY].

[1]

Topic - Irrigation. (सिंचाई)

Paper - III

जल अत्यधिक महत्वपूर्ण संसाधन है। डिमांड 34 घंटे - न केवल पीने के लिए लिया जाता है अपितु अन्य महत्वपूर्ण कार्यों में इसका उपयोग महत्वपूर्ण है।

जल संसाधन दो अर्थ-व्युत्पन्नकृत (Ground Water) एवं सतह जल (Surface Water) हैं जो प्रकृति द्वारा दिया गया है। अतिगत जल से वर्षा भूमि के नीचे गिरने वाले जल से है जो कुओं व ट्यूबवells के माध्यम से निकालकर काम में लाया जाता है। भूतल जल से अर्थ-व्युत्पन्न की तरह पर्याप्त जल वाले जल लेते हैं जो नदियाँ, नहरों, नालाबंदी, आदि में प्राप्त जाता है।

वैश्वीय प्रविष्टि काल से ही अनेक नहरों एवं जलाशयों का निर्माण किया गया। सरस्वती नहर, पूर्वी एवं पश्चिमी यमुना नहर, कावेरी नदीका डेल्टा नहर, ग्रेण्ड एम्प्ट बॉथ संनिकाली नदी नहर डिमांड की प्रथम नहर थीं। 1950 तक नहर-सिंचाई का कुल साधन थीं तथा देश के कुल सिंचित क्षेत्र में डिमांड भागीदारी 39.9% थी। आजादी के बाद नहरों के द्वारा सिंचित क्षेत्र में अनेक वृद्धि हुई है, लेकिन सिंचाई के अल्प साधनों की तुलना में डिमांड भागीदारी घरी है। 2005-2006 में देश के कुल सिंचित क्षेत्र में नहर सिंचाई की भागीदारी 25.71% रह गयी।

कुओं और विजली के पम्प सेरा के उपयोग में आने से कुओं को जलकूपों द्वारा सिंचित क्षेत्रों में वृद्धि हुई है। भारत में योजनाकाल में सिंचाई साधनों की प्रगति

योजना आयोग 3 सिंचाई स्वयंसेवा योजना को सिंचाई विभाग सेनकों में प्रोत्साहित किया है।

- (1) वृद्ध सिंचाई योजनाएँ - इस योजनाओं में अज सिंचाई योजनाओं एवं अर्थ-व्युत्पन्न को शामिल किया जाता है अनेक अन्तर्गत 10 हजार हेक्टेयर से अधिक क्षेत्र को सिंचाई योग्य क्षेत्र बनाते हैं। इनमें प्रधानतया कड़ी-2 नहरें बहुत-उद्वेगम योजनाएँ होती हैं।
- (2) मध्य सिंचाई योजनाएँ - अन्तर्गत अज सिंचाई योजनाओं को रखा जाता है अनेक अन्तर्गत प्रथम योग्य क्षेत्र को हजार हेक्टेयर से अधिक क्षेत्र को सिंचाई योग्य क्षेत्र बनाते हैं। ये योजनाएँ वृद्ध सिंचाई योजनाओं से छोटी, लेकिन बहुत सिंचाई योजनाओं से बड़ी होती हैं। यह प्रथम प्रथम योजनाएँ होती हैं जिनमें छोटी नहरें बनायी जाती हैं।
- (3) सूखे सिंचाई योजनाएँ - अनेक अज सिंचाई योजनाओं को शामिल किया जाता है



Dr. GAUTAM KUMAR (Department of Geography)

Email.ID - gyan000005@gmail.com Phone No- 09430509798/9682491741

जि - का कृषि मंत्र क्षेत्र दो हजार हेक्टेयर तक होता है, लेकिन उपरोक्त क्षेत्रों में यह है कि योजनापंथी बुद्धि या मध्यम कक्षा वाली योजना का अंग नहीं होनी चाहिए। इन योजनाओं में कुल, तालाब व छोटी-छोटी नहरें बनायी जाती हैं। [2]

सिंचन के साधन (MEANS OF IRRIGATION)

भारत की कृषि रचना में विविधता होने के कारण सिंचन के साधन का भी चयन अलग-अलग क्षेत्रों में किया जाता है। उत्तरी भारत में खिखर नहरें और कुएँ से तथा दक्षिण के प्रायद्वीपीय भागों में तालाबों द्वारा सिंचन किया जाता है। भारत में सिंचन के कुछ ही साधन हैं :-

- [1]- नहरें - (Canals), -
- [2]- कुएँ - (Well), -
- [3]- नलकूप (Tubewells), -
- [4]- तालाब - (Tanks), -

[1] नहरें (Canals) - भारत के कुल सिंचित क्षेत्र के लगभग 28.3% भाग पर सिंचन होता है। अधिकांश नहरें या तो उत्तरी भारत के मैदान में अथवा तटवर्ती नदियों के दलदलों में पायी जाती हैं। बनाने के लिये दुरुपयोगी क्षेत्रों की आवश्यकता होती है। समतल भूमि और नदियों में जल का उचित प्रवाह। ऐसी अवस्था अर्थात् उत्तरी भारत में नदियों के किनारों में पायी जाती है। उत्तरी भारत की प्रायद्वीपीय नहरों में वर्ष भर नदियाँ बहा ही जल आता रहता है किन्तु दक्षिण की अधिकांश नहरों में जल की प्राप्ति अनाम्य में एकत्रित किए गए जल से होती है। क्योंकि वहाँ की नदियाँ सर्दियों में सूख जाती हैं। अतः जोड़ के समय इनका जल बड़े जलाशयों में इकट्ठा करा लिया जाता है और वही जल छोटी नहरों द्वारा किसानों की भूमि की सिंचन करता रहता है। नहरों के विकास के लिये कनाडा एलिया डेवलपमेंट कॉमिशन (CAD) की सहायता में भारत सरकार ने 1974-75 में की थी। सिंचन नहरों का विकास अत्यंत महत्वपूर्ण है।

नहरों का वर्गीकरण :-

- (i) अनिव्यवधि या बाढ़ की नहरें (Inundational Canals) - जो जल तक मिलता है अथवा नदियों में बाढ़ आती हैं। अतः ऐसी नहरें अकस्मात् से अथवा तब जल की कमी से सूखी रहती हैं। अतः इन भागों में एक ही वर्ष में पैदा की जाती है। ऐसी नहरें अथवा अधिकांशतः निव्यवधि नहरों में परिवर्तित कर दी जाती हैं।
- (ii) निव्यवधि नहरें (Perennial Canals) - ये उन नदियों या बड़े बाँधों से



# GOVERNMENT DEGREE COLLEGE

MADHUBAN, PAKARI DAYAL "EAST CHAMPARAN,, (BIHAR)

Dr. GAUTAM KUMAR (Department of Geography)

Email.ID - gyan000005@gmail.com Phone No- 09430509798/9682491741

[3]  
निकाली जाती हैं जिनमें सुपेप हीजल करा रहता है। नदी के अलावा  
को कभी-2 बांध काजद रोक दिया जाता है और फिर इन रोके  
जो जल से नहीं द्वारा आस-पास के क्षेत्र की सिंचाई की  
जाती है। उत्तरी भारत की नहरें इसी प्रकार की हैं।

उत्तर प्रदेश, आंध्र प्रदेश विद्यार्. महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, तमिलनाडु और  
राजस्थान में पाया जाता है।

## → हरियाणा की नहरें (Canals of Haryana) -

(क) पश्चिमी यमुना नहर (Western Yamuna Canals) - 14वीं शताब्दी की उत्तर  
नहर को 1568 में अकबर ने खोला था। सन् 1864 में अंग्रेज सरकार  
ने हीरूदासपुर पुल सिंचाई के माध्यम से नहर को नयेवाला  
के सिंचित से जल लेकर हरियाणा के आंबाला, करनाल, रोहतास, हिसार और पंजाब  
के पटियाला जिले में सिंचाई करती है। उत्तरी राजस्थान और दिल्ली के कुछ  
भागों में भी इसे सिंचाई होती है। इन नहर की तीन मुख्य शाखाएँ हैं।  
- दिल्ली शाखा, हंसी शाखा, चित्तौड़ शाखा। पश्चिमी यमुना नहर द्वारा  
48 लाख हेक्टेयर भूमि में सिंचाई होती है। इन नहर की कुल शाखाओं  
सहित लम्बाई 3,200 Km है।

(ख) गुडगाँव नहर (Gurgaon Canal) - दिल्ली के सिविल और बलाराम स्वार  
द्वारा निकाली गई है। इसे पलवल गुडगाँव, और बलाराम स्वार तहसीलों के  
कायदा 2 1/2 लाख हेक्टेयर भूमि पर सिंचाई की जाती है। इसके अतिरिक्त  
हरद्वार, और मुख्य कायदा नहर एक नगर विद्युत-नगर से भी  
दक्षिणी-पूर्वी हरियाणा में सिंचाई होती है।

## → पंजाब की नहरें (Canals of Punjab) -

(क) सरहिन्द नहर (Sarhind Canal) - यह सतलज नदी बेरोफ (हयनगर)  
स्थान से निकाली जाती है। इन नहर केवल पंजाब के लुधियाना, ज़िरीजपुर,  
पटियाला, नाभा और हरियाणा के हिसार और गोंड जिलों की 6 लाख  
हेक्टेयर भूमि में सिंचाई की जाती है। इसकी मुख्य शाखाएँ आबोहर, भटिण्डा  
पटियाला कोटला, धरमधर और दोकना हैं। ज़िरीजपुर के निकट यह नहर  
पुणे सतलज में मिल जाती है। इन नहर की सिंचाई क्षमता की वृद्धि करने  
के लिये सरहिन्द फीडर स्कीम (Sarhind Feeder Scheme) के अन्तर्गत  
दोके बांध बनाकर एक फीडर नहर को मिलाने का कार्य किया गया है।

(ख) ऊपरी बारी दोकना नहर (Upper Bari Doab Canal) - यह नदी  
से भाधपुर स्थान से निकाली जाती है। इसकी लम्बाई 2,900 Km है।



[A]  
 डीकी स्वर्णी शाखा द्वारा पंजाब के गुरदासपुर और अमृतसर जिलों में  
 गीत लाख हेक्टेयर कृषि की सिंचाई होती है। डीकी मुख्य शाखाएँ लोहर  
 वल्लभ और लवरी हैं। उपर्युक्त शाखाएँ अब पाकिस्तान में हैं।

<ग> भाखड़ा मंगल बांध नहर (Mangal Dam Canal) - भाखड़ा बांध से नजल  
 विद्युत नहर निकली जाती है। यह 64km लम्बी है। प्रहरी सीमेन्ट से बनायी गयी  
 है। प्रह नहर सन् 1954 में बनकर तैयार हुई। इससे पंजाब के फिरोजपुर और  
 नाभा, हरियाणा के झिंजर और कलाल जिले और उत्तरी राजस्थान की लाख  
 हेक्टेयर कृषि की सिंचाई हो रही है।

<घ> विन्त दोआब नहर (Vindhya Doab Canal) - सन् 1954 में तैयार हुई  
 भाखड़ा नजल की ही शाखा है जो स्वतन्त्र नदी से जल लेना स्थान से निकली  
 जाती है। डी नहर द्वारा रवी और व्यास नदियों के दोआब में जालन्धर  
 और घोड़ानापुर जिलों की लगभग एक लाख हे० कृषि में सिंचाई हो रही है।

<ङ> कुब्जा भाखड़ा नहर (Bhakra Canal) - यह स्वतन्त्र लेविकली जाती है।  
 रोपड़ के निकट नजल विद्युत नहर का जल डीमें हरियाणा के झिंजर व  
 करनाल और रोहतक जिलों की लगभग 7 लाख हे० कृषि में सिंचाई होती है।

<च> पूर्वी नहर (Eastern Canal) - यह पंजाब में सन् 1954 में बनकर  
 तैयार हुई। माधोपुर - व्यास सम्पर्क नहर बनाकर रवी नदी का अपरिष्कृत  
 जल पूर्वी नहर में डाला जाता है। इससे फिरोजपुर में सिंचाई की जाती है।  
 उत्तर प्रदेश एवं इन्टरराज्य नहरें [MAP]

